॥ॐ॥

।।ॐ श्री परमात्मने नमः।।

॥श्री गणेशाय नमः॥

वैदिक गणेश-स्तवन

विषय-सूची

वैदिक गणेशस्तवन- 3

वैदिक गणेश-स्तवन

गणानां त्वा गणपतिꣳ हवामहे प्रियाणां त्वा प्रियपतिꣳ
हवामहे निधीनां त्वा निधिपतिꣳ हवामहे वसो मम।
आहमजानि गर्भधमा । त्वमजासि गर्भधम् ॥

[शुक्ल यजुर्वेद २३ । १९]

हे परमदेव गणेशजी ! समस्त गणों के अधिपति एवं प्राणियों के पालक और समस्त प्रिय पदार्थों तथा सुखनिधियों के निधिपति ! हम आपका आवाहन करते हैं। आप सृष्टि को उत्पन्न करने वाले हैं, हिरण्यगर्भ को धारण करनेवाले अर्थात् संसारको अपने-आप में धारण करने वाली प्रकृति के भी स्वामी हैं, हम आपको प्राप्त करें।

नि षु सीद गणपते गणेषु त्वामाहुर्विप्रतमं कवीनाम्।
न ऋते त्वन्क्रियते किं चनारे महामर्कं मघवञ्चित्रमर्च॥

[ऋक्० १० । ११२।९]

हे गणपते ! आप स्तुति करने वाले हमलोगों के मध्य में भली प्रकार स्थित हों। आपको क्रान्तदर्शी कवियों में अतिशय बुद्धिमान्–सर्वज्ञ कहा जाता है। आपके बिना कोई भी शुभाशुभ

कार्य आरम्भ नहीं किया जाता। अतः हे भगवन् ! ऋद्धि-सिद्धि के अधिष्ठाता देव ! हमारी इस पूजनीय प्रार्थना को स्वीकार कीजिये।

गणानां त्वा गणपतिं हवामहे कविं कवीनामुपम श्रवस्तमम्।
ज्येष्ठराजं ब्रह्मणां ब्रह्मणस्पत आ नः।
शृण्वन्नूतिभिः सीद सादनम् ॥

[ऋक्० २।२३।१]

हे गणों में प्रमथ गण, गणपति देव, क्रान्तदर्शी कवियों में श्रेष्ठ कवि, शिवा-शिव के प्रिय ज्येष्ठ पुत्र, अतिशय भोग और सुख आदि के दाता ! हम आपका आवाहन करते हैं। हमारी स्तुतियों को सुनते हुए पालनकर्ता के रूप में आप इस सदन में आसीन हों।

नमो गणेभ्यो गणपतिभ्यश्च वो नमो नमो
व्रातेभ्यो व्रातपतिभ्यश्च वो नमो नमो
गृत्सेभ्यो गृत्सपतिभ्यश्च वो नमो नमो
विरूपेभ्यो विश्वरूपेभ्यश्च वो नमः॥

[शुक्ल यजुर्वेद १६ । २५]

देवानुचर गण-विशेषों को, विश्वनाथ, महाकालेश्वर आदि की तरह पीठ भेद से विभिन्न गणपतियों को, संघों को, संघपतियों को, बुद्धिशालियों को, बुद्धिशालियों के परिपालन करने वाले उनके स्वामियों को, दिगम्बर-परमहंस जटिलादि चतुर्था श्रमियों को तथा सकलात्मदर्शियों को नमस्कार है।

ॐ तत्कराटाय विद्महे हस्तिमुखाय धीमहि।
तन्नो दन्ती प्रचोदयात् ।।

[कृ० यजुर्वेदीय मैत्रायणी० २।९।१।६]

उन कराट (सूँड को घुमाने वाले) भगवान् गणपति को हम जानते हैं, गजवदन का हम ध्यान करते हैं, वे वह एकदन्ती सन्मार्ग पर चलने के लिये हमें प्रेरित करें।

नमो व्रातपतये नमो गणपतये नमः प्रमथपतये नमस्तेऽस्तु लम्बोदरायैकदन्ताय विघ्ननाशिने शिवसुताय श्रीवरदमूर्तये नमः॥

[कृ० यजुर्वेदीय गणपत्यथर्वशीर्ष १०]

व्रातपति को नमस्कार है, गणपति को नमस्कार है, प्रमथपति को नमस्कार है; लम्बोदर, एकदन्त, विघ्ननाशक, शिवतनय श्रीवरदमूर्ति को नमस्कार है।

संकलनकर्ता:

श्री मनीष त्यागी

संस्थापक एवं अध्यक्ष

श्री हिंदू धर्म वैदिक एजुकेशन फाउंडेशन

www.shdvef.com

।।ॐ नमो भगवते वासुदेवाय:।।